आत्महत्य: मानव मन की कमजोरी

G. R. VIJAYAKUMAR
II B. Sc., Chemistry

आधुनिक युग में आत्महत्या की संख्या बढती जा रही है। इसका प्रमाण समाचार-पत्रों में प्रचुर है। यह सर्व साधारण होने के कारण लोग इसके संबन्ध में विशेष ध्यान नहीं देते। परन्तु जब कोई धनिष्ठ मित्र इसका शिकार बन जाता है अथवा आत्महत्या के दृश्य देखने का अवसर मिलता है तब इसके बारे में सोचने के लिए विवश हो जाते हैं। तब मन में ये विचार उठते है "क्या मानव मन इतना कमजोर है ? क्या उसके संयम नामक चीज है ही नहीं ? आत्महत्य के कारणों के बारे में विचारने पर अनेक कारण सुविदित होते हैं।

ज्यों ज्यों बचपन से जवानी में कदम रखता है त्यों त्यों मानव मन में आशाएँ और काक्षाएँ उदित होती हैं। लेकिन जीवन के विविध प्रवाह में कहीं कहीं यथार्थ की चट्टानों से टकराकर ठेस पहुँचने की संभावना है। यदि उसकी वांछित आशाओं पर पानी फेर जाता है तो उसका स्वप्न टूट जाता है। इस प्रकार उसके जीवन की अजस्र धारा इन समस्याओं, चाहे गार्हिक हो, चाहे सामाजिक हो, चाहे वैयक्तिक हो, से खण्डित हो जाती है। फलत: समस्याओं के शिकंजे से युक्त होने के लिए दु:खमयी संसार की अपेक्षा यमलोक को वह श्रेयस्कार समझता है।

आत्मसम्मान की रक्षा केलिए की जानेवाली आत्महत्या का उल्लेख इतिहास के पन्नों में सुरक्षित है। मुगलों के आक्रमण से बचने के लिए आग में प्राण का अन्तकरनेवाली पद्मिनी जैसी वीर बाला इसका ज्वलन्त उदाहरण है। ऐसी कई घटनाएँ दृष्टिगत होती है जहाँ कि प्रेमिका प्रेमी के धोखे का शिकार बन जाता है। वह इस दुनिया को मुँहदिखाने केलिए लायक नहीं बन जाती है। उसकी दृष्टि में केवल एक ही चारा आत्महत्या ही होता है।

विद्यार्थियों के बीच आत्महत्या करनेवालों की संख्या न गण्य नहीं है। जहाँतक एक योग्य छात्र का संबन्ध है, वह हमेशा परीक्षामें उत्तीर्ण होने की आशा करता है। परन्तु, जब वह अनुत्तीर्ण होता है, तो स्वाभाविक रूप में उसके मन में आघात होता है उसका अचंचल मन आलोडित होता है। वह जीवन के सर्वप्रथम पराजय को जीवन में नयी बातों को ग्रहण करने का अवसर नहीं समझता। इसके विपरीत, वह निराश-अग्नि में जल-जल कर मृत्यु को गले लगाता है।

प्रेम-नैराश्य से आत्महत्या करनेवालों की संख्या गणनीय है। युवक तथा युवतियाँ प्रेमबद्ध हो जाती है। वे परिस्थिति से बिलकुल अनभिज्ञ रहते है। यौवन के आवेश में सब कुछ विस्मृत कर एक दूसरे का साथ निभाने के वादे करते है। परन्तु, इनके बीच कुछ गार्हिक, सामाजिक अथवा धार्मिक समस्या एक विघ्न बन जाता है। परिणामत: विवाह असंभव हो जाता है। इस निराशाजनक जीवन के समाधान के रूप में वे अपने जीवत नैया को डुबो देते हैं।

आज की युवा-पीढी प्रेम की उदात्तता और अनश्वरता पर विश्वास नहीं रखती। आज का 'प्रेम' स्वार्थ-प्राप्ति का एक साधन है। स्थिर प्रेम पुराना हो गया है। आधुनिक मानव प्रेम को नैतिक दृष्टिकोण से निहारने केलिए उद्यत नहीं है। आजकल मानवीयता क्षीण होती रहती है। इस शोचनीय

स्थिति के कार्य कारण हो सकते हैं। उनमें से एक मूल भूत कारण है शून्यता बोध।

अमरिका के प्रख्यात वैज्ञानिक रोलो मे (Rollo May) अपने "मनुष्य के 'स्वयं' की खोज" नामक ग्रन्थ में यह अभिमत देते है कि आधुनिक मानव की मुख्य समस्या शून्यता बोध है। मानव अपने को पहचानने के यत्न में है। उसके मन में अपने अस्तित्व के बारे में अनेक प्रश्न उठते हैं। इसके लिए टीका-टिप्पणी करना दुष्कर बनजाता है। वह निरुत्तर होकर विपण्ण बन जाता है। निराशा पूरित मन में विद्रोह की तीक्ष्ण ज्वाला धधकने लगती है। इस नैराश्य-बोध की ज्वाला में वह प्राणाहुति देता है।

सार्त्र, कामू पेने आदि की रचनाओं में 'निरर्थतावाद' का स्वर मुखरित है। कामू के 'आउट सैंड' शीर्षक उपन्यास का प्रथम वाक्य उल्लेखनीय है। वाक्य यों आरम्भ होता है "मेरी माता की मृत्यु हुई, क्या वह कल थी" ? नायक विस्मृति में यहाँ तक खो जाता है कि अपनी माता की मृत्यु के बारे में सोचने में भी अशक्त बन जाता है। यह निरर्थतावाद प्रायोगिक जीवन को संवारने में सहायक नहीं प्रतीत होता। यह एक प्रबल चिन्तनतरंग बनकर रह जाता है। लेकिन छान-बीनने पर स्पष्टतः लक्षित होता है कि एक परिधि तक आधुनिक मानव इस मिथ्याबोध का अनुभव करने अभ्यस्त बन जाता है। यही मिथ्याबोध लोगों की आत्महत्या की प्रेरणा बन जाती है।

मानव जीवन के दो पक्ष है--सुख और दुख। कभी भी यह भ्रम में नहीं होना चाहिए कि जीवन का आराम केवल सुख ही है; न कि किंचित दुख। चिरकाल सुख भोगने की महत्वाकांक्षा ही मानव जीवन में उथल पुथल का सृजन करती है। लेकिन ऐसे लोग भी है जिनके जीवन में केवल पीडा और विवाद ही रहता है। वे पद-पद पर लांछित होते हैं। मुसीबत एक के बाद एक आती है। जीवन में ठोकर खाना ही विधि बन जाता है। उस समय आशावादी रहकर, आत्महत्या को इसकेलिए समाधान न मानकर, एक नये प्रभात की प्रतीक्षा करके विजय के सोपान चढ़ने का निरन्तर प्रयास करना चाहिए। पर यह देखा जा सकता है कि भीरु और निराशाग्रस्त बन कर कुछ लोग अपने जीवन को अर्धविकसित रूप में अन्त कर देते है। यह बहुत खेद की बात है। सृजनात्मकता में अधिष्ठित होकर 'कर्म' को जीवन दर्शन बनाकर जीवन यापन करने पर सुनिश्चय ही हमें पूर्णरूप में पुष्पित होकर खुशबू बिखेरने का अवसर मिलेगा; यहाँ जिससे प्रत्येक व्यक्ति तथा समस्त मानव समुदाय उन्नत बन सकते है।

बुद्धि और विश्वास

VIJAYAKRISHNAN KOLOT

I PDC P 3

देखो
वैज्ञानिक प्रगति का
सत्य, सुन्दर, अद्भुत ।
पल में मनुष्य आगे बढ़ते जाते हैं
मनुष्य की बुद्धि निराली है ।
कहाँ, कल का नग्न-मानव
कहाँ आज की नूतनता
चाँद में मनुष्य, शून्यता में मनुष्य
फिर भी आगे बढ़ता जाता है
मनुष्य की बुद्धि निराली है ।

देखो
हम अपने चारों ओर
लोग मानते हैं देवता है चाँद ।
मनुष्य वहाँ हो आया है
फिर भी लोग कहते है देवता है चाँद ।

लोग कहते थे चेचक
देवता का है प्रसाद
किन्तु वैज्ञानिक संसार ने
औषधि उस की खोज निकाली
तब भी कहते हैं लोग
चेचक देवता का प्रसाद है ।

लोग मानते हैं पत्थर को ईश्वर
पंडित कहते हैं मन में है ईश्वर
फिर भी लोग कहते हैं पत्थर को ईश्वर
कहानियाँ सौ-सौ हैं इस भाँति
मनुष्य की बुद्धि निराली है
किन्तु मनुष्य के विश्वास
वे भी निराले ही हैं ।

चिन्ताक्रान्त जीवन

RAJAN P. C.
II B. Sc., Physics

बढती है कल की चिन्ता में,
बढती है मन की व्यथा,
फल क्या चिन्ता में फंसकर ?
बेकार बन जाता है जीवन ।

हर पल मिटनेवाला है,
दुख या सुख होता भी है,
फिर क्या फायदा चिन्ता से
बेकार बन जाएगा जीवन ।

सब को करना है अपना काम
दुख में समय न गंवाना है,
आगे बढना है सब को
सुखमय हो जाएगा जीवन ।

भविष्य की चिन्ता अच्छी है,
सफल मनुष्य की निशानी है,
बीते युग पर विचार कर
नष्ट न करो यह सुवर्ण जीवन ।

अच्छी अच्छी योजनाएँ कर,
आगे बढो तुम संकोच बिना
देखोगे विजय के सोपान
नष्ट नहीं होगा यह सुवर्ण जीवन ।

जागरण

M. P. JANARDHAN
II B. A. Economic

जाग उठी भारत भूमि
तीस फूलों का हार पहन कर
सुन्दर ललना सी प्यारी ।

सदियों की रात मिटी
आज़ादी के आंगन में
सुवर्ण शोभा बरसती है ।

मृत कल को भूल जाए
आज को गले लगाएँ
सोनेवालो जाग उठो
एक नया सूर्य निकल आया
आज़ादी और ऐश्वर्य के
आलिंगन की शुभ वेला है ।

आवाज़ है हर कहीं आवाज़
नये जागरण की आवाज़
चोरों, अत्याचारियों को
पकड़ लिया गया है ।

एक नये जागरण की ओर
वीर जयलक्ष्मी की आवाज़ सुनो ।

[प्रेमव...
अनभिज्ञ रहत...
बार एक दूसरे...
न्तु, इनके बी...
समस्या...
असंभव...

मिलन

RAMANANDAN M.
III B. Sc., Physics

लक्ष्मी रोज़ बडे सबेरे उठती है। नहा-धोकर पास के मन्दिर में जाकर ईश्वर से प्रार्थना करती है। फिर अपने घर आकर दिन का सारा काम पूरा करके पास के एक घर में नौकरी करने जाती है।

वह एक बडे घर की नौकरानी है। आधी रात तक लक्ष्मी को उस घर में काम करना पडता है। वहाँ से लौटकर अपनी बूढी माँ की थोडी सेवा-सुश्रूषा करनी पडती है। फिर माँ के साथ खाना खाकर वह सो जाती है। बेचारी लक्ष्मी के एक दिन का कार्यक्रम बस यही है।

लक्ष्मी सदा चुप रहती है। ऐसा लगेगा कि वह कोई मूक जानवर है। उस की जिन्दगी में हंसी-खुशी के लिए कोई स्थान ही नहीं। उस की आयु अब 45 के ऊपर होगी। वह सदा किसी विचार में डूबी रहती है। उस के दुख का कारण दुनिया भी जानती है, किन्तु कोई भी उसकी सहायता नहीं कर सकता।

वर्षों पहले उसकी शादी हुई थी। उस की पति पास के एक कारखाने में मज़दूर था। उनकी एक बच्ची भी हुई थी। लेकिन विधि ने ऊपर क्रूर प्रहार किया। बच्ची की मृत्यु हुई। फिर दो साल के लिए उसके कोई संतान नहीं हुई। पति-पत्नि दोनों बहुत चिंतित थे। लक्ष्मी के पति का बडा भाई बडा चलाक था। उसके ग्यारह सन्तानें थीं। उसके घर की हालत बहुत बुरी थी। उसने सोचा कि अपना छोटा भाई पत्नी को छोडकर उसके साथ आकर रहे तो घर की हालत सुधर जाएगी। इस उद्देश्य से उसने एक दिन अपने छोटे भाई को बुलाकर कहा— भय्या सुनो, कल हमारे घर एक ज्योतिषी आये थे। मैं ने उनसे पूछा कि तुम दोनों को अब बच्चा कब होगा। सब बातें पूछ लेने के बाद उन्होंने बताया कि लक्ष्मी की कोख से अब बच्चा पैदा नहीं होगा। इतना भी नहीं, पति-पत्नी के रूप में तुम्हारा संबंध भी अधिक काल तक टिक नहीं सकता। तुमें से एक महीनों के अन्तर मर जाएगा।

बडे भाई की बातें सुनकर लक्ष्मी का पति डर गया। अंधविश्वासों के वतावरण में पला वह मनुष्य अपनी पत्नी को छोड कर बडे भाई के पास गया। इस प्रकार भाई की चाल सफल निकली।

तब से लक्ष्मी का जीवन अन्धकारमय हो गया। उसे अपनी और अपनी बूढी माँ की जीविका चलाने के लिए एक घर में नौकरी करनी पडी। पति से भेंट हुए अब वर्षों बीत गये। वह रोज़ मंदिर में जाकर ईश्वर से यही प्रार्थना करती थी कि उसका खोया हुआ सौभाग्य वापस मिले।

एक दिन रोज़ की तरह लक्ष्मी उस बडे घर में नौकरी करने पहुँची तो पता चला कि घर के सभी लोग दूर कहीं जा रहे हैं। शाम को ही वे सब लौट आयेंगे। घर की मालिकिन ने कहा कि घर में लक्ष्मी अकेली नहीं होगी, एक नौकर भी होगा जो अभी हाल में उस घर के कामों में लगा था।

घर के सब लोग समय पर निकले। लक्ष्मी रसोई में काम कर रही थी कि किसी ने उस को पीछे से आकर पकड लिया। वह घर का नया नौकर ही था। लक्ष्मी तुरन्त समझ गयी कि उस आदमी का

इरादा बहुत बुरा है। वह बडे जोर से चिल्ला उठी। शेरगुल सुनकर आस पास के लोग इकट्ठे हुए। किसी ने लक्ष्मी को उस बदमाश के हाथ से बचाया। इस अवसर पर लक्ष्मी का पति भी वहीं से जा रहा था। उसे अपनी पत्नी की दयनीय अवस्था पर बडी लज्जा हुई। वहाँ पर सम्मिलित लोगों ने उसे समझाया कि उसका बडा भाई असल में उसका शोषण कर रहा है।

लक्ष्मी की आँखों से आँसू बह रहे थे। वह अपने पति के पैरों पर गिर पडी और अपने को बचाने की याचना की। उस ने लक्ष्मी को उठाया और उस के आँसू पोंछ डाले। फिर उसने कहा—लक्ष्मी, मैं ने बडी भारी गलती की। मैं धोखा खा गया था। मेरे कारण तुमको कितनी तकलीफें झेलनी पडीं। अब मैं तुम्हें नहीं छोडूंगा। लक्ष्मी का हाथ ग्रहण कर वह घर की ओर चला। उसने कहा कि अब मरण ही हम को अलग कर सकता है।

जिन्दगी और रुपया

K. V. A. LATHEEF
II B. A.

जब हमारे पास पैसे नहीं होते तब हम कहते हैं कि भगवान ने सब राहें बन्द कीं। लेकिन भगवान ने क्या किया ? हमें ज़िन्दगी देने के साथ साथ जीने की राह भी आपने दिखा दी है। हम उन राहों का अच्छी तरह इस्तेमाल नहीं करते। गलती वहीं पर है।

सोचिए, पैसे के बिना क्या ज़िन्दगी है ? क्या खुशी है ? क्या दोस्ती है ?

वर्षों पहले की बात है। मैं एक बडा सेठ का बेटा था। मेरे कई दोस्त थे। एक दिन मैं शहर से घर जा रहा था। एक दोस्त रास्ते में मिला। वह हँसते हुए बोला—"अरे यार, तुम कहाँ थे इतने दिन। बहुत दिन बाद दर्शन मिला है। चलो, चाय पिलाओ"।

उसको पहले भी कई बार मैं ने इस प्रकार चाय पिलायी थी। अब की बार भी वही हुआ।

चार पाँच दिन के बाद फिर वह रास्ते में मिला। उस दिन वह मुझे छोडने को तैयार नहीं था। बोला —"चलो भाई, चाय पी आयें।"

"नहीं यार, मैं ने अभी चाय पी है, तुम चलो।" उस ने कहा–अच्छा तुम मेरे साथ दूकान तक आओ। हम बात भी करेंगे और मैं चाय भी पी लूँगा। बडी भूख लगी है।

हम दोनों दूकान में चले। चाय-वाय पीकर हाथ धोने के बाद दोस्त जेब में हाथ डालते हुए आश्चर्य प्रकट कर बोला—"बाप रे। अब मैं क्या करूँगा। जेब से पैसा कहीं गिर गया है। अब क्या करूँगा।"

आखिर दूकान में मुझ को पैसा देना पडा।

देखिए, यह भी एक प्रकार की दोस्ती है। आप को भी कई ऐसे दोस्त होंगे। वे आदमी को नहीं, पैसे को प्यार करते हैं।

लेकिन संसार में ऐसे भी लोग हैं जो पैसे से बढकर मनुष्य से प्रेम करते हैं। मेरा एक दूसरा दोस्त था। एक दिन शाम को मैं ने उससे कहा —

"देखो यार शहर में एक अच्छा हिन्दी सिनेमा आया है। तुम हिन्दी फिल्म बहुत पसन्द करते हो न ? चलो, आज तुम्हें वह दिखा देंगे।"

वह थोडी देर के लिए चुप रहा। फिर बोला —"यार, मेरे पास पैसा नहीं है। आजकल मेरी हालत बहुत बुरी है।"

"पैसे की बात तुम छोड दो। वह मेरे पास है, पिक्चर देखने चलो" मैं ने बडे प्रेम से कहा। मित्र मन्द स्वर में बोला—"मैं नहीं आऊँगा।"

"क्यों ? क्या तुम मुझसे इतना भी प्रेम नहीं करते कि मेरे साथ एक सिनेमा देखने नहीं आओगे ?" मैं बहुत नाराज़ हुआ।

तब वह बोला—"प्यारे दोस्त, मैं तुम को बहुत चाहता हूँ, लेकिन तुम्हारा पैसा मैं नहीं चाहता।

उसकी दोस्ती सच्ची थी। वह दोस्त आज इस दुनिया में नहीं है। किसी ने सच ही कहा है कि अच्छे लोग जल्दी इस दुनिया से चल बसते हैं।

एक और दोस्ती की चर्चा करके मैं इन पंक्तियों को खतम करूँगा। वह मामूली दोस्ती नहीं थी, मुहब्बत का बन्धन था।

लडकी मेरी पडोसिन थी। मेरे एक दोस्त की बहिन। कभी कभी मैं दोस्त से मिलने उस घर में जाया करता था।

एक दिन वह मेरे पास आकर मीठी आवाज़ में बोली। "तुम बहुत सुन्दर हो।" फिर शरमाकर मेरे सामने से गयी। धीरे धीरे मैं उसको चाहने लगा। एकान्त में हम बातें करते थे। प्यार की बातें, सपनों की बातें।

एक दिन हम एक सिनेमा देखने गये। 'प्यार किया तो डरना क्या'। उस के घरवालों को भी पता चला कि हम प्यार करते हैं।

दिन बीत गये। मेरे बाप व्यापार में भयंकर पतना का सामना कर रहे थे। हमारी हालत बुरी हो गयी। तब भी मैं पडोसिन से मुहब्बत करता था। लेकिन वह धीरे धीरे मुझ से दूर हटने लगी। मैं उसके घर जाऊँ तो भी वह बाहर नहीं आती थी। मुझे इस पर बडा दुख हुआ।

एक दिन उससे बातें करने का मुझे अवसर मिला। मैं ने उससे पूछा—"यह सब क्या है? तुम आजकल दिखाई भी नहीं देती। मैं तुम से कुछ बात करना चाहता हूँ।"

"क्या बात"—उसने रूखी आवाज़ में पूछा।

बात तुम को भी मालूम है, मैं तुम से शादी करना चाहता हूँ। शादी जल्दी होनी चाहिए। उसके लिए....."

वह बात काटकर बोल उठी—"मिस्टर, शादी करना खेल नहीं। तुम्हारी हालत मैं अच्छी तरह जानती हूँ। रुपये के बिना इस संसार में कुछ नहीं होगा। 'वाट ईज़ लव विथाउट मनी।' हमारे बीच मामूली दोस्ती थी। शादी तो समान स्तर के स्त्री-पुरुष के बीच में होती है। तुम सोच लो—हमारी और तुम्हारी हालत में कितना फरक है?"

मैं सन्न रह गया। वाह री ज़िन्दगी! ज़िन्दगी में रुपये का इतना बडा स्थान। लगता है आधुनिक विश्व का ईश्वर रुपया है। केवल उसको मनुष्य चाहता है, उसपर वह विश्वास करता है।